प्राक्कथन

बात सन 1990 की है, जब मैं बी.ए. फायनल में पढ़ रहा था उसी समय मेरे हाथ से भगवतीचरण वर्माजी की विशालकाय रचना 'भूले बिसरे चित्र' छूटी थी, जिसको मैं पूरा पढ़ नही सका । तद्नंतर जब मैं शिवाजी विश्वविद्यालय में एम्.ए. कर रहा था, तब मैंने अपने अधूरे कार्य को पढ़कर पूरा किया जिसका प्रभाव मेरे मन पर इतना गहरा पडा कि मैं उन भूले बिसरे चित्रों को भूला न सका जिन्हें भगवती बाबू जैसे प्रतिभासंपन्न कलाकार ने साकार किया है । इसी कृति के कारण भगवतीचरण वर्माजी का उपन्यास साहित्य पढ़ने का चस्का लगा और उसपर कुछ कार्य करने की इच्छा भी प्रकट हुई । जब मैं एम्.फिल उपाधि शोध-प्रबन्ध का विषय तय करने के लिए सश्रध्देय डॉ. एस्.जे. वाडकरजी के साथ जिक्र करने गया, तब उन्होंने इस विषय पर कार्य करने के लिए झट से अनुमति दे दी ।

वस्तुतः भगवतीचरण वर्मा एक सफल सामाजिक उपन्यासकार थे । उनके समस्त उपन्यासों में युग जीवन की कतिपय समस्याओं का विशद चित्रण मिलता है । जिसके अंतर्गत उन्होंने कतिपय पुरूष एवं स्त्री पात्रों के व्यक्तित्व को समेटने का प्रयत्न किया है, जिससे समाज के लिए चेतना मिली है । यहाँ मेरा लक्ष्य "भगवतीचरण वर्मा के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों में चित्रित स्त्री पात्र एक अनुशीलन" पर ही रहा है । इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न थे :

1) किस परिवेश में भगवतीचरण वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विकास हुआ है ?
2) उन्होंने अपने सामाजिक उपन्यासों में किन-किन समस्याओं को उठाया है ? जिससे वे सामाजिक उपन्यासकार होने का बोध होता है ?
3) उनके उपन्यासों के स्त्री पात्रों की व्याप्ति कहाँ तक है ?
4) क्या वे स्त्री पात्र अपने - आपमें समाधान पाने में सफल हुए हैं ?

अध्ययन सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबन्ध को निम्नांकित पॉच अध्यायों में विभक्त करके अपने विषय का विवेचन किया है ।

प्रथम अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है और आर्थिक संघर्ष एवं पारिवारिक संकटों का सामना करते हुए भी उभारे हुए भगवती बाबू के रूप का परिचय दिया है ।

द्वितीय अध्याय भगवतीचरण वर्मा और उनके सामाजिक उपन्यास में उनको सामाजिक उपन्यासकार सिद्ध करके उनके सामाजिक उपन्यासों का संक्षेप में परिचय कर दिया है ।

तृतीय अध्याय में भगवतीचरण वर्माजी का नारी विषयक दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए उनके प्रमुख सामाजिक उपन्यास विशेषकर 'आखिरी दाँव', 'भूले बिसरे चित्र' और 'सामर्थ्य और सीमा' में आए हुए स्त्री पात्रों की श्रेयनामावली दी है ।

चतुर्थ अध्याय में उनके प्रमुख सामाजिक उपन्यास 'आखिरी दाँव', 'भूले बिसरे चित्र' और "सामर्थ्य और सीमा' में चित्रित स्त्री पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत किया है ।

पंचम अध्याय उपसंहार का है । इसमें उपर्युक्त सभी अध्यायों में अपने विषय का विवेचन करने के उपरान्त निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य मेरे सामने आये वे संक्षिप्त रूप में दिए हैं ।

यह मेरा सौभाग्य है, कि आदरणीय गुरूवर्य डॉ. व्ही.के. मोरेजी की प्रेरणा से डॉ. एस.जे. शाडकरजी के निर्देशन में यह लघु-प्रबन्ध प्रस्तुत करने का अवसर मिला । उनकी इस कृपादृष्टि को शब्दबध्द करना मेरे बस की बात नहीं है ।

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए मुझे मेरे गुरूवर्य प्रा.सौ.एम्.एस्. जाधव, प्रा.सौ. आर.जे. पाडलकर, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. टी.एस्. पाटील, प्रा. राजेंद्र इंगोले तथा डॉ. एम्.पी. जाधव आदि का सक्रिय सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त हुई । मैं उन सबके ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकता ।

इनके अतिरिक्त मेरे बंधू श्री. महादेवराव चौगुले सो., बी.जी. चौगुले, जे.पी. शिंदे (मामा), पूज्य माता पिताजी आदि तथा मित्रवर्य आर.के. पाटेकर, प्रा.श्री. एस्.पी. शिंदे, श्री. बी.एस्. शिंदे और सर्जेराव भोसले आदि ने मुझे हमेशा प्रोत्साहन देने का अमूल्य कार्य किया है, मैं उन सब का हमेशा ऋणी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय का ग्रंथालय, स्वामी विवेकानंद कॉलेज कोल्हापुर का ग्रंथालय, शाहू कॉलेज कोल्हापुर का ग्रंथालय, माढा तथा पंढरपुर कालेजों का ग्रंथालय आदि से मुझे समय पर ग्रंथ सामग्री प्राप्त हुई । इन सभी कालेजों के ग्रंथपालों का मैं हृदय से आभारी हूँ । साथ ही साथ उन ग्रंथ लेखकों का भी जिन्होंने ग्रंथ उपलब्धि के लिए सामग्री जुटाई है ।

लघु प्रबन्ध का टंकलेखन कार्य श्री एन्.डी.साखरेजी (सोलापुर) ने समय पर कर देने से मैं यह कार्य समय पर प्रस्तुत कर सका । अतः मैं उनका आभारी हूँ । टंकलेखन त्रुटियों का निराकरण करने का प्रयास तो किया है, किंतु फिर भी कुछ रह जाने की संभावना हैं, जिसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ ।

अतं में मैं उन सब के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होने मुझे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्रदान किया है ।

शोध - छात्र

दिनांक :- २९ / ६ /1994

(हनुमंत रामचंद्र माने)